ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 214-219

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

मलिन बस्तियों में जीवन

1. अतुल कुमार यादव
2. डॉ0 हरिवंश यादव

1. शोध अध्येता, 2. शोध निर्देशक– पूर्व विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, टी0 डी0 पी0 जी0 कालेज, जौनपुर, (उ0प्र0) भारत

Received-07.06.2023, Revised-12.06.2023, Accepted-16.06.2023 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः ***व्यक्ति को जहां नगरीकरण और औद्योगीकरण ने तकनीकी ज्ञान, शिक्षा, विज्ञान और एक अच्छी वैज्ञानिक समझ दी है वही करोड़ों व्यक्तियों को नरकीय जीवन में व्यतीत करने के लिए विवश किया है। मलिन बस्तियों में नारकीय जीवन को देखा जा सकता है। मलिन बस्ती में एक छोटी–सी झोपड़ी, कच्चें मकान अथवा टीन शेड की एक कोठरी में 10 से 15 लोग तक रहते है। ऐसी जगहों पर एक झुग्गीवासी को इतनी भी जगह नहीं मिल पाती है कि वह वहां खाना बना सके, रात में ढंग से सो सके और अपना खाली समय व्यतीत कर सके।***

जल निकासी की कोई व्यवस्था नहीं होती है। पानी यहां सड़ता रहता है। कचरें का ढेर होना यहां सामान्य बात है, शौच आदि हेतु कोई जगह नहीं होती, बैठने के लिए इनके पास कोई खुला स्थान न ही होता है। मलिन बस्तियाँ में जहां बीमारिया अधिक और जीवन कम होता है। थके–हारे, मुर्झाये चेहरे चिपके गाल, गन्दें–फटे कपड़ें पहने घुमते बच्चे यहां की पहचान होते है, इनका जिन्दा रहना और मरना जैसे समाज के लिए कोई मायने नहीं रखता। ये हमेशा मौत के मुहाने पे खड़े रहते है इन्हें पता भी नहीं चल पाता है कि वे कब जवान हुए और कब वृद्ध होकर चारपाई पर आ गये।

कुंजीभूत शब्द– औद्योगीकरण, तकनीकी ज्ञान, नरकीय जीवन, मलिन बस्ती, झोपड़ी, कच्चे मकान, कोठरी, पलायन, अमानवीय।

मलिन बस्तियों की उत्पत्ति औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात शुरू हुई। इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति के बाद यूरोप एवं विश्व के सभी राष्ट्रों में औद्योगीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई। नये कारखानों तथा भारी मशीनों के आविष्कारों से औद्योगीकरण की प्रक्रिया में तेजी आयी, यह सर्वविदित है कि इंग्लैण्ड औद्योगिक क्रान्ति का जन्मदाता है। अतः स्पष्ट है कि सर्वप्रथम मलिन बस्तियों की उत्पत्ति इंग्लैण्ड में हुई, क्योंकि कारखानों में काम करने के लिए भारत व अन्य देशों से जो मजदूर वहां गये, उनके लिए उचित आवास की व्यवस्था नहीं थी। उन्हें गंदे–बदबूदार एवं सीलन भरे छोटे–छोटे कमरों में रहना पड़ता था।

इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति के बाद भारत में भी औद्योगीकरण शुरू हुआ। इससे औद्योगिक क्षेत्रों में श्रमिकों एवं मजदूरों की आवश्यकता हुई वही दूसरे तरफ शहरी जीवन के लिए आवश्यक नागरिक सुविधाएं/सेवाओं की आपूर्ति के लिए भी श्रमिकों एवं मजदूरों की मांग बढ़ी। इस प्रकार औद्योगिक क्षेत्रों में श्रमिकों की आवश्यकता तथा शहरों में शहरी लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु बड़ी संख्या में ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों का पलायन शहरों में हुआ। इस तरह इन शहरी क्षेत्रों में झुग्गी–झोपड़ियों का चलन प्रारम्भ हुआ। ये झुग्गी–झोपड़ी स्थायी एवं अस्थायी दोनों ही रूपों में बनायी जाने लगी। इन झुग्गियों में निवास करने वाले ज्यादातर लोग सामाजिक दृष्टि से हीन, अछूत एवं निम्न कार्य करने वाले होते है।

मलिन बस्तियाँ किसी भी देश के लिए एक कलंक से कम नहीं है। यह भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व भर में विद्यमान है जैसे–जैसे नगरों में उद्योग धन्धों का विकास होता जाता है वैसे ही मलिन बस्तियां भी विस्तृत होती जाती है। इन बस्तियों का निर्माण सामान्यतः नालों, नहरों, नदियों, रेलवे लाइनों, फैक्ट्रियों, सड़कों, पुल के दायें–बाये होता है। ये झुग्गी–झोपड़ियां बिना किसी योजना के बनती है तथा यह एक गंभीर समस्या बन जाती है। यहां निवास की दशा अमानवीय होती है यह शारीरिक एवं बौद्धिक दृष्टि से एक कमजोर पीढ़ी को आगे बढ़ाने का काम कर रही है। इसका प्रमुख कारण इसका अनियमित अनियोजित फैलाव है। भारतीय नगरों में मलिन बस्तियों की भीषण समस्या हैं अपने घरों को छोड़कर ऑने वाले लोगों का नगरों में कोई निश्चित आवास नहीं होता है, इन्हें दैनिक जीवन में उचित सुविधायें न मिल पाने के कारण बहुत सी सामाजिक, आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है, यही वजह है कि इनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय और चिंताजनक है।

नगरों की जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण भाग मलिन बस्तियों में निवास करता है, जो जीविकोंपार्जन की तलाश में अप्रवासी के रूप में बसा है। पेट की आग बुझाने के लिए अमानवीय परिस्थितियों में संघर्ष इनके सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रकटीकरण है समाज वैज्ञानिक दृष्टि से इसका अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

मलिन बस्तियों में देश की कुल नगरीय जनसंख्या का पांचवां भाग निवास करता है। जो जीविकोपार्जन की तलाश में अप्रवासी के रूप में बसा है। पेट की आग बुझाने के लिए अमानवीय परिस्थितियों में संघर्ष इनके सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रकटीकरण है समाज वैज्ञानिक दृष्टि से इसका अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

मलिन बस्तियों में देश की कुल नगरीय जनसंख्या का पांचवां भाग निवास करता है। 1991 में मलिन बस्तियों में रहने वालों की संख्या 4.62 करोड़ थी। जब देश की कुल जनसंख्या 102.7 करोड़ (जनगणना 2001) हो गयी, तो कुल जनसंख्या के 27.78 प्रतिशत लोग नगरों में रह रहे थे। जिनमें से 6.18 करोड़ मलिन बस्तियों में रहते थे। भारत में पहली बार 2001 की जनगणना में ऐसे शहरों की मलिन बस्ती क्षेत्र घोषित किया गया, जिनकी आबादी 1991 की जनगणना के अनुसार, 50,000 या उससे अधिक हो, वर्ष 2011 की जनगणना में तीन प्रकार की मलिन बस्तियां बतायी गयी–1. अधिसूचित 2. मान्यता प्राप्त 3. पहचान युक्त मलिन बस्ती
वर्ष 2001 में इन कस्बों की संख्या 1,743 थी जबकि 2011 में यह बढ़कर 2,613 हो गयी। 2001 में जहां इस तरह की बस्तियों में रहने वाले लोगों की संख्या 5,23,71,589 थी जो 25.1 प्रतिशत की दशकीय वृद्धि के साथ 2011 में बढ़कर 6,54,94,604 होगा।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

तालिका संख्या– 1
भारत में विधिक एवं मलिन बस्तियों वाले कस्बों की संख्या– 2011

विधिक कस्बे	4041
मलिन बस्तियों वाले कस्बे	2613

तालिका संख्या– 2
भारत में प्रारूप अनुसार मलिन बस्तियों की जनसंख्या– 2011

प्रारूप	स्लम जनसंख्या
अधिसूचित मलिन बस्ती	2,25,35,133
मान्यता प्राप्त मलिन बस्ती	2,01,31,336
पहचानयुक्त मलिन बस्ती	2,28,28,135
कुल जनसंख्या	6,54,94,604

तालिका संख्या– 3
भारत की मलिन बस्तियों की कुल जनसंख्या में राज्यों का हिस्सा

राज्य	मलिन बस्तियों की कुल जनसंख्या (% में)	
	2001 जनगणना	2011 जनगणना
तमिलनाडु	8.1	8.9
मध्य प्रदेश	7.2	8.7
उत्तर प्रदेश	11.0	9.5
कर्नाटक	4.5	5.0
महाराष्ट्र	22.9	18.1
ऑनध्र प्रदेश	12.0	15.6
पश्चिम बंगाल	8.9	9.8
राजस्थान	3.0	3.2
गुजरात	3.8	2.6
छत्तीसगढ़	2.1	2.9
दिल्ली	3.9	2.7
हरियाणा	3.2	2.5
उड़ीसा	2.1	2.4
पंजाब	2.8	2.2
बिहार	1.6	1.9
अन्य राज्य / केन्द्रशासित प्रदेश	3.1	3.8

यदि हम शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना करें तो हम पाते है कि नगरों में भूमि की कमी होती है अर्थात् भूमि का एक छोटा टुकड़ा भी होना दुर्लभ होता है और जो साफ–सुथरी जगहें होती है, वहां मकान का किराया भी अधिक होता है, जिसके कारण गरीब आदमी गन्दी बस्तियों में रहने में मजबूर हो जाता है। यह भी एक कारण है जिससे हर दिन मलिन बस्तियों में वृद्धि होती जा रही है इन बस्तियों में कुछ जगहों में छोटे मकान होते है। जिसकी वजह से किराया कम देना पड़ता है। जिसे एक कम आय वाला व्यक्ति भी वहन कर लेता है और यहां रहने लगता है, कम आय और कम किराया के कारण इन गन्दी जगहों पर रहने वाले लोगों का जीवन स्तर निम्न होता जाता है। यह सही है कि इस तरह की जगहों में शहरी जनसंख्या का एक तिहाई भाग निवास करती है। शहरी उन्नति के अनुसार, यह औसत 4 प्रतिशत है और वे अपने स्वयं में 12 प्रतिशत की दर से वृद्धि कर रहे है।[1]

स्पष्ट है कि गांव के लोग धनवान बनने की अभिलाषा लेकर नगरों की ओर पलायन करते है, लेकिन उनकी यह लालसा पूरी नहीं होती और वे मलिन बस्तियों की संख्या में निरन्तर वृद्धि करने लगते है। अधिकांश ग्रामीण गरीब जो नगरों की ओर आते है, मलिन बस्तियों के निवासी बन जाते है। उनका जीवन गांवों में तिरस्कारों से भरा रहता है जिसे छोड़कर वे शहर आते है और कमो वेश शहरों

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

में भी उनकी यही स्थिति रहती है। आज के समय में लोगों का लगाव नगरों की तरफ अधिक होता जा रहा है। शिक्षा, सुरक्षा और अच्छे वातावरण को पाने की प्रबल इच्छा के कारण यह प्रक्रिया और भी तेजी होती जा रही है। परिणामस्वरूप नगरीकरण की प्रक्रिया अविराम गति से आगे की ओर बढ़ती जा रही है, जिसका स्वरूप मलिन बस्तियों की वृद्धि के रूप में देखने को मिल रहा है। ए0आर0 देसाई एवं एस0डी0 पिल्लई (1970)[2] ने अपने अध्ययन में इस बात को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "सामाजिक अवधारणा के अनुसार शहरीकरण अनियन्त्रित होता जा रहा है, जिसका परिणाम मलिन बस्तियों की वृद्धि होती है।"

बम्बई में 1957 में आयोजित मलिन बस्ती उन्मूलन सेमिनार में मलिन बस्ती के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि "मलिन बस्ती उस बस्ती को कहते है, जो अस्त–व्यस्त बसी हो, अव्यवस्थित रूप से विकसित हो एवं सामान्यतः उपेक्षित क्षेत्र हो, जहां की आबादी बहुत अधिक घनी हो, मकान टूटे–फूटे व निम्न स्तर के हों, जहां यातायात की व्यवस्था अपर्याप्त हो, जहां स्वच्छता सम्बन्धी उदासीनता हो तथा जहां के लोग स्वस्थ व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन बिताने के लिए मूलभूत सुविधाओं से वंचित हो।"[3]

संयुक्त राष्ट्र की नगरीय भूमि सुधार नीति (1950) में मलिन बस्ती के बारे में कहा गया कि "मलिन बस्ती वह मकान अथवा मकानों के समूह की बस्ती या क्षेत्र है जहां बहुत घनी आबादी हो, जहां जीवन सम्बन्धी सुविधाओं का पूर्णतः अभाव हो तथा जहां के निवासी स्वस्थ तथा नैतिक जीवन बिता पाने में असमर्थ हो।"[4]

हण्टर (1964)5 ने मलिन बस्ती के बारे में कहा है कि, "मलिन बस्ती नगर में 'कैंसर' रोग के समान है।" मलिन बस्तियों का निर्माण नगरों के अनियोजित विकास कार्यक्रमों के कारण हुआ है, जिसके परिणाम स्वरूप नगरीय जीवन के लिए खतरा उत्पन्न हो गया है। हण्टर ने ही एक अन्य जगह मलिन बस्तियों की व्याख्या करते हुए लिखा है कि, मलिन बस्तियां अब सिर्फ स्थूल बाहरी आकार या आर्थिक सन्दर्भ में ही नहीं देखी जा रही है, बल्कि ये ऐसी सामाजिक स्थिति को इंगित करती है जिसमें मनुष्य की स्वभाव, विचारधारा, आदर्श तथा व्यवहारिकता को बहुत महत्वपूर्ण समझा जाता है। इस प्रकार मलिन बस्तियां अब किसी समाज विशेष की सामाजिक स्थिति का द्योतक बन गई है। इस नये सोच से लोग अब मलिन बस्तियों को नवीन ढंग से देखने लगे है। अब मलिन बस्तियों के निवासियों की गरीबी, आवासीय कठिनाईयां, घनी आबादी, स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें, जातीय समूहों के रहने तथा अपराधीकरण को मिटॉने के संबंध में भी लोगों का ध्यान आकर्षित होने लगा है।

देश में मलिन बस्तियाँ– नगरों एवं महानगरों में गन्दी बस्तियों की बहुत ही भीषण समस्या है। वे लोग जिनकी आमदनी कम होती है रोजगार प्राप्त होने पर अपना एक स्थायी अथवा अस्थायी निवास बना लेते है। ऐसे लोग प्रायः पुल के नीचे, नालों के किनारे, कारखानों के पास, सड़कों के किनारे, रेलवे लाइन के किनारे अथवा ऐसी जगहों पर जो पूरी तरह से उपेक्षित होती है, वहां झोपड़ी डालकर, टिनशेड डालकर अथवा छोटे मकान बनाकर रहने लगते है। जहां आवश्यक मानवीय आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं हो पाती है। वर्तमान समय में शहरों में जमीन की कीमत, मकान निर्माण के सामान एवं मजदूरी में वृद्धि हो गई है। जिसकी वजह से नये मकानों का निर्माण करना दुष्कर कार्य होता जा रहा है और जगह की कमी के कारण कई मंजिलें मकान का निर्माण हो रहा है, जिनमें प्रायः हवा, रोशनी तथा जल निकासी आदि का उचित प्रबन्ध नहीं हो पाता है।

मलिन बस्तियों की प्रमुख विशेषताओं– अभी तक जितने भी अध्ययन मलिन बस्तियों पर हुए है वे अधिकांश वर्णनात्मक ढंग के ही है, जिनमें वहां के निवासियों तथा उनके रहन–सहन के स्तर पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया गया है। चाहे विकासशील देश हो या विकसित हो दोनों ही प्रकार के देशों में ये बस्तियां पायी जाती है, जहां के निवासी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक दशा सांस्कृतिक रूप में सभ्य समाज से काफी पिछड़े माने जाते है। (हंटर 1964)

निर्धारक अथवा कारक–

1. भूमि पर मकानों की अति सघनता पायी जाती है, जिसके कारण हवा का बहाव बिल्कुल अवरूद्ध रहता है।
2. मकान प्रायः जीर्ण–शीर्ण होते है, इन मकानों में रहने वाले लोगों को जाड़ा, गर्मी, बरसात से पर्याप्त सुरक्षा नहीं कर पाते है।
3. मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों की अधिक सघनता होने के कारण यहां गोपनीयता का अभाव पाया जाता है।
4. नागरिक तथा सामुदायिक सुख–सुविधाओं का अभाव पाया जाता है।
5. यहां पर खाली जगहों पर पशुओं का निवास पाया जाता है, ये पशु प्रायः सभ्य कही जाने वाली बस्तियों के लोगों के ही होते है।

इन जगहों पर रहने वाले लोगों का स्वास्थ्य उपयुक्त पोषण एवं चिकित्सा के अभाव में गिर जाता है। अधिकांशतः शिक्षा के अभाव में नैतिक पतन हो जाता है, जिसकी वजह से विभिन्न तरह के चारित्रिक दोष देखने को मिलते है। एक ही स्थान पर एक साथ अधिक लोगों के रहने के कारण गोपनीयता भंग हो जाती है। फलस्वरूप महिलाओं में लोक–लाज, परस्पर सम्मान, आदर, शालीनता का हास हो जाता है। उनका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं रह जाता अर्थात् उनका वैयक्तिक विघटन हो जाता है।

1. निर्धनता– निर्धनता एक अभिशाप है, निर्धन मनुष्य के लिए यह भू–लोक ही नरक है। निर्धन, बेरोजगार, दैनिक वेतन भोगी श्रमिक ये सब उस वर्ग के व्यक्ति है जो कठोर परिश्रम करने के बाद भी दो समय का भोजन अपने परिवार को नहीं दे पाते है। फिर ये महंगे किराये के मकान कैसे ले सकते है और न ये अपना मकान बना सकते है। समस्यायें इनके जन्म से इनकी साथी होती है। अभावों में जीवनयापन इनकी विवशता है।

2. निवास की समस्या– नगरों में जगह सीमित है। और मांग अधिक है भूमि का मूल्य आसमान को छूता जा रहा है। सामान्य व्यक्ति भूमि क्रय करके नगर में मकान नहीं बना सकता। अधिकांश व्यक्ति किराये के मकानों में रहते है। नगरों में मकानों के किराये इतने अधिक है कि सामान्य व्यक्ति किराये के मकान भी नहीं ले सकता है। जिनके साधन और आय सीमित है, उन्हें विवश होकर मलिन

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

बस्तियों में रहना पड़ता है। मकानों की संख्या सीमित है और रहने वाले लोगों की संख्या लाखों में है परिणामस्वरूप मलिन बस्तियों में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है।

3. औद्योगिक क्रान्ति– औद्योगिक क्रान्ति की मलिन बस्तियों की उत्पत्ति में महत्वपूर्ण भूमिका है। औद्योगिक नगरों में जीविका के अनेक विकल्प उपस्थित होते है। लाखों की संख्या में ग्रामीण व्यक्ति यहां अधिक से अधिक धन अर्जित करने की कल्पना संजोए आते है, परन्तु उसे यहां निराशा ही हाथ लगती है। वह मिल, फैक्टरी, कारखाने या और किसी प्रकार का श्रम करके अपना पेट भरता है। निर्धनता उसका साथ नहीं छोड़ती है। इस औद्योगिक महानगरीय सभ्यता और संस्कृति में उसे तो मलिन बस्तियों में रहना ही है। उसके पास इसके अतिरिक्त विकल्प ही क्या है?

4. शोषणीय प्रवृत्ति– उत्पादन का महत्वपूर्ण अंग होने के बावजूद श्रमिक, मलिन–बस्तियों में रहता है और मालिक वातानुकूलित बंगलों और महलों में। पूंजीवादी व्यवस्था की यह बुनियादी नीति है कि आम–आदमी को रोजी–रोटी की परेशानियों में फंसाये रखा। भूखा व्यक्ति अपने परिवार के पेट भरने की चिन्ता पहले करता है और कुछ बाद में। इसलिए उसे अभाव में जीने दो जिससे कि वह सदैव मालिकों का दास बनकर रहे।

5. अशिक्षा और जागरूकता का अभाव– अशिक्षा और जागरूकता के अभाव ने मलिन बस्तियों के विकास में वृद्धि की है। वे व्यक्ति जो निर्धनता के शिकार है। वे मलिन बस्तियों की गंदगी से भी अनभिज्ञ है। जहां सुविधायें मात्र नाम की भी नहीं है।

बीमारियों और सामाजिक बुराईयां असीमित है फिर भी वे यहां इसलिए रहते है, क्योंकि उन्हें यहां नाम मात्र का किराया देना पड़ता है अथवा विवशता में वे स्वयं झोपड़ी बनाकर यहां रहने लगते है।

6. जनसंख्या में तीव्र वृद्धि– नगर और महानगरों की जनसंख्या कई–कई लाख तक पहुंच गई। दिल्ली, मुम्बई और कोलकाता की जनसंख्या करोड़ों में पहुंच गयी है। इतनी बड़ी जनसंख्या के अनुपात में मकानों का निर्माण नहीं हुआ है। श्रमिकों की कॉलोनियाँ नाममात्र की हैं। लाखों ग्रामीण जो इन महानगरों में काम करने आते है। वे इन्हीं मलिन बस्तियों में रहते हैं। नगर के अंदर और नगर से दूर इन मलिन बस्तियों में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। इसका प्रमुख कारण है निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या का दबाव।

7. गतिशीलता में वृद्धि– पहले के लोग अपने गांव जमीन–जायदाद, घर–गृहस्थी से अत्यधिक लगाव रखते थे। वे अत्यधिक मजबूरी में ही अपना गांव या कस्बा छोड़ते थे। किन्तु यातायात के बेहतर साधन, तेजी से बढ़ती जनसंख्या तथा समाज में आये बदलावों के कारण व्यक्ति नगरों में काम खोजने और नौकरी के लिए प्रेरित हुआ है। प्रतिदिन लाखों की संख्या में व्यक्ति गांव से नगर, एक नगर से दूसरे नगर और नगर से महानगर में काम की तलाश में जाते है। इतने व्यक्तियों के रहने का स्थान कोई भी नगर अचानक कैसे बना सकता है। यही कारण है मलिन बस्तियां निरन्तर बढ़ती जा रही है।

8. नगरों में पर्याप्त सुरक्षा– गांव छोड़कर ग्रामीण इसलिए भी नगर आ रहे हैं, क्योंकि यहां उन्हें सुरक्षा मिलती है, जो गांवों में नहीं है, नगरों में प्रशासनिक व्यवस्था पुलिस, फोर्स और कई स्थानीय निकाय होते हैं जो कानून और नियमों द्वारा जनता के जानमान की रक्षा करते है, इसलिए नगरों की जनंसख्या वृद्धि के साथ–साथ मलिन बस्तियों में भी वृद्धि होती जा रही है।

9. प्राकृतिक प्रकोप– कभी सूखा, कभी बाढ़, कभी पाला तो कभी ओलावृष्टि, भारतीय गांव सदैव प्राकृतिक प्रकोपों के शिकार रहे हैं। सभी प्राकृतिक प्रकोप खेती को नष्ट करते है, खेती ही गांव के लोगों की आय का मुख्य साधन है, कृषि के नष्ट होने के कारण ग्रामीण नगरों में काम करने आते है। ये सब मिलकर नगरों में मलिन बस्तियों को विकसित करते हैं और नई मलिन बस्तियां स्थापित करते है।

10. ग्रामीण बेरोजगारी– गांवों में वर्ष भर में कुछ महीने ग्रामीणों को काम मिलता है, और शेष महीनों में वे बेरोजगार रहते हैं। इसलिए खेती के समय तो ग्रामीण व्यक्ति गांव में उपलब्ध रहता है और उसके बाद वह नगर में काम करने आ जाता है। इनमें से अधिकांश रिक्शा चालक, ठेले खींचने वाले, खोमचा लगाने वाले या मिल में श्रमिक होते है अथवा कोई छोटा–मोटा कार्य कर अपनी जीविका अर्जित करते है। उनमें से अधिकांश व्यक्ति मलिन बस्तियों में रहते है।

11. नगर नियोजन का अभाव– नगरों में यदि मलिन बस्तियों का विकास हो रहा है, तो इसका बहुत कुछ उत्तर दायित्व नगर पालिका और सरकार पर है, यदि नगर का विकास सुनियोजित और योजनाबद्ध ढंग से किया जाता, तो मलिन बस्तियों का विकास शायद इस रूप में संभव न हो पाता।

12. मलिन बस्तियों की उपेक्षा– मलिन बस्तियां व्यक्तिगत सम्पत्ति भी है। सैकड़ों झुग्गी–झोपड़ियों, चेरी और आहातों के मालिक है। इन्हें किराये से मतलब है, किन दशाओं में व्यक्ति जीता और मरता है, इससे इनका कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि सरकार इन पर दबाव डालकर इन मलिन बस्तियों की सफाई कराए, तो शायद यहां इतनी गंदगी न रह जाए।

मलिन बस्तियां के दुष्परिणाम–

1. मलिन बस्ती एक वह स्थान है जहां कमरों में भीड़ रहती है और व्यक्ति एकान्त के लिए व्याकुल रहता है। एक–एक कमरे में 10 से 15 तक व्यक्ति रहते है। इसके बीच कुछ भी गोपनीय नहीं रहता। बच्चे बुरी आदतों को ग्रहण कर लेते है।
2. ये बस्तियां गन्दगी और बीमारियों का केन्द्र होती है। यहां सब कुछ प्रदूषित होता है। यहां न शुद्ध जल मिलता है। न वायु और न वातावरण। यहां के लोगों को क्षय रोग होना सामान्य बात है। पेचिस, डायरिया तथा ऐसे ही भयंकर रोग यहां देखे जा सकते है।
3. चरस, गांजा, स्मैक, कच्ची शराब बेचने के ये प्रमुख अड्डे है। साथ ही जुआ खेलना और अनैतिक यौन सम्बन्धों का व्यापार यहां खुले आम चलता है, यहां चोर, डकैत, आतंकवादी तक शरण लेते है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

4. यहां के बच्चे सामाजिक बुराईयों के मध्य जन्म लेते है और ये सहज ही बुराईयों को अपना लेते है असामाजिक कार्यो में लगे लोग बच्चों के माध्यम से ही चरस, गांजा और कच्ची शराब बेचने का धंधा करते है। यही बच्चे अनैतिक यौन सम्बन्धों की दलाली भी करते है। जुआ के अड्डों की देख–रेख करते है। इन्हें जेब काटने, चोरी करने, मोबाइल फोन व चैन आदि झपटने की बकायदा ट्रेनिंग दी जाती है। आगे जाकर यही बड़े अपराध करने लग जाते है।

5. यहां परिवार और व्यक्तित्व का निर्माण नहीं होता। अधिकांश परिवार अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए उचित व अनुचित सभी प्रकार के कार्य करते है। शराब, जुआ, अनैतिक यौन सम्बन्ध, चोरी आदि व्यक्ति को जहां नष्ट करते हैं वही परिवार को भी विघटित करते है।

6. मलिन बस्तियां वे स्थान हैं जहां सामाजिक आदर्श, मूल्य, नैतिकता, सहिष्णुता आदि के दर्शन नहीं होते। ये अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए कुछ भी सही–गलत करने के लिए तैयार रहते है। पैसा देकर कोई भी नैतिक अनैतिक कार्य इनसे कराया जा सकता है। अराजकता, साम्प्रदायिकता फैलाने और दंगा कराने के लिए इन्हें खरीदा जा सकता हैं। इस प्रकार के कार्यो से समाज विघटित होता है।

मलिन बस्तियों की व्याख्या करते हुए डॉ0 राधाकमल मुखर्जी ने लिखा है, औद्योगिक केन्द्रों की हजारों मलिन बस्तियों ने मुनष्यत्व को पशु बना दिया है। यहां नारीत्व का अनादर होता है और बाल्यावस्था को आरम्भ में ही विषाक्त किया जाता है। ग्रामीण सामाजिक संहिता श्रमिकों को औद्योगिक केन्द्रों में अपनी पत्नियों के साथ रखने के लिए हतोत्साहित करती है। ऐसे देश में जहां कम आयु में विवाह प्रचलित है वहां युवा श्रमिक, जिसने अपना वैवाहिक जीवन प्रारम्भ ही किया हो, नगर के आकर्षण से प्रभावित होता है।

वर्गेल (1955)6 ने अपनी पुस्तक सोशियोलॉजी में तीन प्रकार की मलिन बस्तियों का उल्लेख किया है :–

1. बुनियादी मलिन बस्तियां– इन मलिन बस्तियों का निर्माण इनके प्रारम्भिक काल से ही 'मलिन बस्ती' के रूप में किया जाता है और इनको किसी तरह से विकसित नहीं किया जा सकता है।

2. उच्चवर्ग तथा मध्यवर्ग के लोगों द्वारा छोड़ दी गई बस्तियां– उच्चवर्ग तथा मध्यम वर्ग के लोग कुछ जगहों को छोड़कर चले जाते है बाद में ये बस्तियां मलिन बस्ती के रूप में परिवर्तित हो गयी। इस तरह की बस्ती बोस्टन नगर के दक्षिणी बाहरी छोर पर पायी जाती है।

3. जगह के बदलाव से बनी मलिन बस्तियां– ये स्थान किसी समय में औद्योगिक केन्द्रों के नजदीक पड़ते थे, किन्तु समय के साथ इनमें गिरावट आने लगी और अन्ततः ये स्थान मलिन बस्ती के रूप में परिवर्तित हो गये।

विश्वज्ञान कोष (1968) के अनुसार7– मलिन बस्तियां कचरे तथा चालू नगरीय मलिन बस्तियों के अन्दर नहीं आते है। यदि मलिन बस्ती का मापदण्ड घनी आबादी, टूटे–फूटे मकान तथा मूलभूत सुविधाओं के न रहने के कारण मनुष्य के रहने के लिए अयोग्य होना ही माना जाय, तो भारत के किसी महानगर की आबादी का एक तिहाई से लेकर दो तिहाई तक का भाग मलिन बस्ती के घेरे में आ जायेगा। भारत में तीन तरह की मलिन बस्तियां पायी जाती है।

1. वे मलिन बस्तियां जो मकान छोड़ने के कारण, बाजार के दूसरे स्थानों पर चले जाने के कारण तथा राज्य की राजधानी के बदल जाने के कारण, नगर के मध्य भाग में विकसित हो गयी है।
2. ऐसी मलिन बस्तियां जो औद्योगिक केन्द्रों के पास स्थित है।
3. वे मलिन बस्तियां जो नगर के बाहरी छोर पर बनी हुई है।

मुम्बई में मलिन बस्ती स्वच्छता विषय पर सेमिनार में मलिन बस्ती का विभाजन इस प्रकार किया गया है।8

1. मिश्रित मलिन बस्ती जिसमें निजी निवास गृह भी है और औद्योगिक भवन भी है।
2. अल्पकालिक मलिन बस्तियां जैसे शिविर।
3. अनाधिकारिक रूप से जबरदस्ती जमीन पर कब्जा करके बसने वालो की मलिन बस्ती।
4. मजदूरों के लिए अल्पकालिक या अस्थायी खेमें अथवा पड़ाव।
5. मालिकों द्वारा चलाई गयी गृह निर्माण योजना, जिसमें मलिन बस्तियों को भी शामिल किया गया है।
6. गैर मलिन बस्ती क्षेत्रों में मलिन बस्तियां प्रारम्भिक दशा में।
7. वह मलिन बस्तियां, जो उजाड़ने की दशा में अथवा जर्जर अवस्था में है।
8. औद्योगिक मलिन बस्तियां।
9. कर्मचारियों के रहने के लिए बने निवास गृह जिन पर सरकार का अथवा किसी सरकारी संस्था का अधिकार हो।

महात्मा गांधी ने (1932)9 में विद्यार्थियों की एक सभा को सम्बोधित करते हुए, दिल्ली की कुछ मलिन बस्तियों के सन्दर्भ में कहा था कि, "अपनी आंखों से देखें बिना तुम लोग कल्पना तक नहीं कर सकते, कि दुनिया में व्यक्ति के रहने के लिए ऐसा भी स्थान हो सकता है। इस बस्ती को देखने के बाद खाना–पीना तक अच्छा नहीं लगता है, इसे देखते ही जैसे उल्टी आती है। वहां ऐसी गंदगी थी कि उसका वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द तक नहीं है।"

टी0के0 मजूमदार (1983)10 के अनुसार, "जाति के आधार पर अलग बस्ती भारतीय गांवों तथा कस्बों की प्राचीन काल से विशेषता रही है। आबादी की यह पारम्परिक विशेषतायें बड़ें शहरों में भी पायी जाती है। अतः मलिन बस्तियों का विश्लेषण करते समय यह बात ध्यान में रखनी होगी, कि नगरीय समाज बड़ी इकाई का एक अंश मात्र है। मलिन बस्तियां जो न केवल कुछ लोगों का आर्थिक पिछड़ापन ही नहीं, बल्कि सामाजिक पिछड़ापन भी दर्शाती है। यह एक बड़ी सामाजिक व्यवस्था के परिणामस्वरूप है। भारतीय गांव

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

हमेशा से अपने बाहरी हिस्से में छोटी जाति के लोगों को जगह देते रहते हैं, यहां तक कि सरकार भी आवासीय सुविधा प्रदान करते समय इन लोगों को गांव के अन्य लोगों से दूर ही रखती है, फलस्वरूप ये लोग अन्त तक सांस्कृतिक रूप से पिछड़ें ही बने रह जाते है तथा समाज की मुख्यधारा में नहीं आ पाते। ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रों में स्थिति एक ही तरह की नहीं है। गांवों में निम्न जाति के लोग कुछ सेवाओं के लिए सदैव से उपयुक्त समझे जाते थे तथा उन पर उनका पूरा अधिकार भी होता था, दूसरे गांवों में साधन की कमी नहीं होती थी, जैसा कि आजकल के नगरों में पायी जाती है, जिसके फलस्वरूप शहर के गरीब निवासी आवासीय दुर्व्यव्यवस्था व सफाई शहरों में जो कुछ साधन उपलब्ध है, वे सुविधा सम्पन्न तथा बड़े लोगों के लिए ही प्रयोग में लाये जाते है और गरीबों को कोई नहीं पूछता।''

भारतीय मलिन बस्तियों का अध्ययन करने पर पता चलता है कि यहां कि मलिन बस्तियों में केवल गरीब ही नहीं रहते, बल्कि निम्न जाति के लोग भी रहते है, इसी को स्पष्ट करते हुए, डी0शूजा (1979) ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया है कि यदि इस ढंग से देखा जाय तो ज्ञात होगा, कि भारतीय नगरों में मलिन बस्तियों में केवल गरीब ही नहीं है, बल्कि बहुत ही निम्न जाति के लोग भी है, फलस्वरूप गरीबों तथा निम्न जाति के लोगों में बराबर संघर्ष रहता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. यूनाइटेड, नेशन्सः वर्ल्ड हाउसिंग सर्वे 1974, न्यूयार्क, 1976, पृ0 30
2. देसाई, ए0आर0 एण्ड पिल्लई, एस0डी0, ''स्लम एण्ड अरबनाइजेशन'', पापुलर प्रकाशन, बाम्बे, 1970.
3. रिपोर्ट ऑन द सेमिनार ऑन स्लम क्लिअरेन्स, इण्डियन कान्फ्रेन्शियल सोशल वर्क, बाम्बे, मई 14–20, 1957.
4. ''अरबन लैण्ड पालिसीज'', न्यूयार्क यूनाइटेड नेशन्स सीक्रेट डॉक्यू मेंट्स, 51/एस0सी0ए0/9, अप्रैल 1952 पृ0 200.
5. हंटर, डी0आर0 (1964): ''दी स्लम्स, चैलेन्ज एण्ड रिस्पाँस दी फ्री प्रेस ऑफ ग्लेन्सी, लंदन, पी0पी0 1, 15, 21–35.
6. वर्गेल, ई0ई0 (1955) 'अरबन सोशियोलॉजी, मैक–ग्राहिल सिरीज।
7. 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल वर्क इन इण्डिया' द प्लानिंग कमीशन, गवर्नमेण्ट ऑफ इण्डिया, 1968, पृ0 207–214.
8. 'रिपोर्ट ऑन दी सेमिनार ऑन स्लम क्लिअरेन्स, 1955.
9. भारत सेवक समाजः स्लम्स, ऑफ ओल्ड देलही, रिपोर्ट ऑफ दी सोशियों इकोनामिक सर्वे ऑफ दी स्लम ऑफ ओल्ड देलही सिटी।
10. मजुमदार, टी0के0 (1983) 'अरबनाइजिंग पुअर : ए सोशियोलॉजिकल स्टडी ऑफ द मेट्रोपोलिटन सिटी ऑफ देलही, लान्सर्स पब्लिकेशन्स, न्यू देलही।
11. डी शूजा, विक्टर, एस0 (1979): सोशियो कल्चरल मार्जिनेलिटीः एथ्योरी ऑफ अरबन स्लम्स एण्ड पावर्टी इन इण्डिया, सोशियोलॉजिकल बुलेटिन, 28 (1–2, मार्च–सितम्बर) पृ0 9–2.

*****